संपादकीय

बात पेंच के जंगलों की है, मेरे सबसे प्रिय मित्र मोगली के जंगल की, जिसका जिक्र रुडयार्ड किपलिंग की मशहूर किताब 'द जंगल बुक' में मिलता है। जहाँ जानवरों और वन सम्पदा दोनों से ही मानुषिक छेड़ छाड़ पर पाबन्दी है। पिछले कुछ दिनों मैं वहाँ था। चारों ओर पर्यटकों के दलों को जंगल में जीपों से घूमते देख रहा था। घने जंगलों के बीचों-बीच जाकर मैं देखता था कि, हिरन के झुण्ड हमारे आस पास आ जाते जब हम उनकी फोटो लेने की कोशिश करता तो वे थोड़े चकित होकर देखते ठिठकते फिर कुलांचे भरते हुए इधर उधर जाकर चरने लगते। मैं उन चीतलों की मनुष्य के प्रति यह आश्वस्ति देखकर हैरान था की वे मनुष्य की तमाम क्रूरताओं के बाद भी उससे डर नहीं रहे या यों कहें की मनुष्य पर अब भी विश्वास करने को तैयार थे। मैं सोचने लगा की साहित्य रचना का आरंभिक काल जिसे आमतौर पर जनजातीय लोक साहित्य कहते हैं और जिसमें रचना शक्ति अपार है उसमें मनुष्य और जानवरों की आपसी निर्भरता के न जाने कितने किस्से बयान किये गए हैं। ऋषि कण्व का आश्रम, शकुंतला और वन प्राणियों की अपनी अपनी भावकुलता की पारस्परिक हिस्सेदारी ये सब कोरी कल्पना नहीं थी। ऐसा समय रहा होगा, लौटकर फिर आ सकता है जिसके करोनाकाल के लाकडाउन के दिनों में प्रकृति ने स्पष्ट संकेत भी दिए, जब खाली सड़कों पर सिंह शावक, चीतल, मोर, उछल-कूद, नाचना-गाना सब इत्मीनान से कर रहे थे।

भूरीबाई और चित्तरकाज

• शंपा शाह •

गणतंत्र दिवस पर इस साल 2021 में भील लोक-कलाकार श्रीमती भूरी बाई को पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। प्रस्तुत है, श्रीमती भूरी बाई के बारे में शंपा शाह का यह लेख। **–संपादक**

शंपा शाह

शहर में दिन भर की मजदूरी के छह रुपये मिलते हैं। दोनों बहनें चाचा के साथ भोपाल आ गईं। दूसरे सारे लोग भोपाल के बड़े तालाब के किनारे झोपड़ियाँ बनाकर रहते थे। चाचा मुख्यमंत्री निवास के आउटहाउस में रहते थे। भूरीबाई भी वहीं रहने लगी। भूरी अपनी बहन और गाँव के दूसरे